दैनिक भास्कर
रविवार, 11 जुलाई, 2021 नोएडा

वृक्षारोपण समय की सच्चाई एवं जरूरत

सभ्यता /संस्कृति

आदिकाल से ही मानव जीवन में वनों की अहम जगह रही है। यहां यह कहना उचित रहेगा कि देशों की सभ्यता एवं संस्कृति न केवल वनों में पनपी, बल्कि विकसित भी हुई है। जंगलों में रहकर अपना जीवन निर्वाह करता था। वृक्षों के उपयोग से वह अपनी जीवन की जरूरतें अनाज, फल, फूल, ईंधन की लकड़ी आदि को पूरा करने के लिए निर्भर था। सच है, तब जीवन सरल व जरूरतें सीमित हुआ करती थीं।

गीतांजलि सक्सेना

आज शहरीकरण के बढ़ते दायरे में अपने वाणिज्यिक उद्देश्यों को पूरा करने की लालसा में मनुष्यों ने अपने समकक्ष पर्यावरण संबंधी अनेकों समस्याएं उत्पन्न कर ली हैं। पर्यावरण के दुरुपयोग का परिणाम सबके सामने है। दुनिया भर के देशों पर ग्लोबल वार्मिंग का खतरा मंडरा रहा है। इसके तहत धरती के बढ़ते तापमान के कारणवश अजीबोगरीब जलवायु परिवर्तन की स्थिति का सामना हो रहा है। पर्यावरण प्रदूषण को नियंत्रित करने में वृक्षारोपण के महत्व को न केवल समझने की, बल्कि इसके संरक्षण हेतु एवं समय चक्र को सुचारू रूप से चलाने की जरूरत है। देश की सरकारों को पर्यावरण संरक्षण के लिए हरसंभव कोशिश और अधिक गंभीरता से इस ओर अहम कदम उठाने चाहिए।

प्रकृति का सबसे महत्वपूर्ण व कीमती उपहार वृक्षों के बिना पृथ्वी पर जीवित प्राणियों का अस्तित्व सम्भव नहीं है। एक तरह से यह मानव जाति का जीवनयापन साथी है। प्रकृति के स्रोतों के तत्वों की हर क्रिया को संचालित करने में वृक्षों की भूमिका होती है। पर्यावरणीय संतुलन के लिए इनकी अहमियत को हम जानते हैं। वृक्षों की मदद से नदियों के बहाव, मिट्टी के कटाव और पानी के अपवाह को रोकने में मदद मिलती है। पृथ्वी की सतह से वन का तेजी से घटना और अनेक वृक्ष प्रजातियों का लुप्त होना हर देश की भौगोलिक स्थिति में पर्यावरण व्यवस्था को कमजोर बनाता है।

इसका बहुत ही सरल सर्वश्रेष्ठ उपाय ... वृक्षारोपण करने के महत्व को स्वीकार करते हुए अपने स्तर पर इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए मुस्तैदी से कार्य करने होंगे। पर्यावरण में बढ़ते प्रदूषण को देखते हुए पौधरोपण की गतिविधि को अपनी जीवनशैली में अच्छे स्वास्थ्य के लिए हर तरह का प्रयास करना होगा। दरअसल, हम में से बहुत से लोगों ने इसे शौक के रूप में अपनाए हुए हैं। प्रकृति के अनमोल भेंट को अवसर एवं मौके पर छोटे-बड़े पौधों को उपहार के रूप में देने पर विश्वास करते हैं और इस चलन को अपनाए हुए हैं। वर्तमान परिस्थितियों में हर प्रयास ... अधिक से अधिक पेड़-पौधे द्वारा ही हम ग्रह को हरा-भरा ही नहीं, बल्कि मनुष्यों सहित अन्य जीवित प्रजातियों को भी जीवन निर्वाह कराने में कई तरह से मदद करते हैं। यही नहीं, वृक्षारोपण से वनस्पतियों और वन्यप्राणियों के जीवन को सुरक्षित वातावरण मिलता है। ऐसा परिवेश उनके विकास के लिए प्रभावी होता हैं। इस प्रकार वनों की जैव-विविधता को बढ़ाने में भी मदद मिलती है।

वृक्षारोपण करना मानव का समाज के प्रति दायित्व है कि अगली पीढ़ी को हम ऐसा स्वस्थ वातावरण सुनिश्चित कर पायें, जिसमें ऑक्सीजन की आपूर्ति की कमी कभी कम न हो। यह सम्भव है वृक्षारोपण से ... पर्यावरण को सुरक्षित और वनों को संरक्षित करने की ओर अधिक ध्यान देने की जरूरत को दर्शाता है। हमें भूलना नहीं चाहिए कि वनों की कमी या विलुप्त होती वृक्षों की प्रजातियों को खोजने की कोशिश को प्रोत्साहित करना होगा, ताकि वन्य जीवों को सुरक्षित प्राकृतिक वातावरण उपलब्ध हो।

संयुक्त अरब अमीरात की राजधानी आबूधाबी की पर्यावरण एजेंसी (ईएडी) ने पेड़ों के संरक्षण परियोजना के अंतर्गत विलुप्त प्रजाति का जीवित पेड़ को खोज निकालने में सफलता हासिल की है। अलसरह सदाबहार पेड़, जिसकी ऊंचाई लगभग नौ मीटर है, जिसके पत्ते अंडाकार चमड़े की बनावट और इसकी घनी गोलाकार शाखाएं हरी मुकुट समान दिखती हैं। इसके फूल बढ़ कर छोटे-छोटे कांटेदार फलों रूप में पनपते हैं। स्थानीय रूप से इसे अल-सर के नाम से जाना जाता है। अरबी में अलमरौद, जो लेटिन वैज्ञानिक मेरूआकैसिफोलिया नाम की उत्पत्ति है। पर्यावरण संरक्षणवादी के अनुसार यह पेड़ लगभग सौ साल से अधिक पुराना एक जीवित पेड़ है। इसकी छाता जैसी बनावट को देखकर लगता है, रेगिस्तान में छाया प्रदान करने में सक्षमता रखता होगा।

> *वृक्षारोपण से वनस्पतियों और वन्यप्राणियों के जीवन को सुरक्षित वातावरण मिलता है। ऐसा परिवेश उनके विकास के लिए प्रभावी होता है। इस प्रकार वनों की जैव-विविधता को बढ़ाने में भी मदद मिलती है।*

आबूधाबी पर्यावरण एजेंसी ने इस दुर्लभ प्रजाति अल-सरह पेड़ की खोज और इसकी पहचान हाल ही में दर्ज की है। स्थानीय विश्वविद्यालयों और वैज्ञानिक मिलकर अध्ययन कर रहे हैं। इस विलुप्त प्रजाति के संरक्षण हेतु पेड़ों की मौजूदा ऊतकों के माध्यम से संख्या को बढ़ाने की प्रयास करने में जुटे हुए हैं। इस प्रजाति के पेड़ों को पूरे अफ्रीका, प्राचीन मिस्र में पवित्र माना जाता था। अरब प्रायःद्वीप विशेष रूप से यमन, जार्डन और फिलिस्तीन में भी पाया जाता है। गत वर्ष यूएई में अलऐन शहर के पूर्व में मलकत में रॉक संरचनाओं के भीतर और ओमान की सीमा के पास खोजा गया है। यूईए सरकार महत्वपूर्ण स्थानीय पेड़ों को संरक्षित और उन्हें विकसित करने के उद्देश्य से किया जा रहा प्रयास बेहद सराहनीय है। इस क्षेत्र में लुप्त हो रही प्रजातियों के लिए हर छोटा बड़ा हस्तक्षेप देश के समग्र प्राकृतिक संसाधनों के विकास और विस्तार में मददगार साबित होगा वह समझते हैं। देश के संरक्षण वादी मरुस्थल भूमि पर पौधे और जड़ प्रणाली वातावरण को शुद्ध, मिट्टी के कटाव से निपटने, वर्षा को नियंत्रित करने वन-जातियों का आश्रय, जीविका आदि के लिए महत्वपूर्ण स्रोत है। इसलिए देश प्राकृतिक विरासत के भविष्य ... को सुरक्षित और आगे बढ़ाने की ओर वचनबद्ध हैं। जिसके तहत पर्यावरण संरक्षण सम्बन्धित सभी विभाग कई महत्वपूर्ण परियोजना के तहत अध्ययन नियमित करते रहते हैं। दरअसल सरकार का मकसद सिर्फ वनों को बचाने के लक्ष्य की ओर प्रयास में वृक्षारोपण के लाभ एवं उनके महत्व पर जोर देना है। दिलचस्प यह है कि यूएई सरकार के संघीय कानून के तहत जंगली पौधों को काटने, उखाड़ने या अवैध रूप से बेचने पर प्रतिबंध है। नियम नहीं मानने पर जुर्माना व सख्त सजा का प्रावधान है। सरकार ... गैर सरकारी व पर्यावरण संरक्षण संस्थाओं के साथ मिलकर देशी स्थाई पेड़ों के भविष्य की रक्षा के लिए विशेष कदम उठाए हुए हैं। जिसके अंतर्गत कठोर रेगिस्तान वातावरण में भी हरा-भरा रह सकने वाली जंगली पौधों की कई प्रजातियों के बीजों का आरोपण किया जाता है। इन सफल प्रयासों के तहत कुछ वर्ष पहले अलग गफ वृक्ष को 2008 में यूएई का राष्ट्रीय पेड़ घोषित करने की उपलब्धि हासिल की। 'गफ' के पेड़ों को रेगिस्तान वातावरण में स्थिरता लाने और देश की सांस्कृतिक व पारंपरिक महत्व की भूमिका को स्वीकार किया गया है।

आबू धाबी में तकरीबन 500 देशी पौधों की प्रजातियों का निवास है। इनकी प्रचुर उपस्थिति प्राकृतिक तंत्र में रहने योग्य वातावरण बनाने की दिशा की ओर कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। पौधों की संख्या बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयास अन्य देशों को प्रोत्साहित भी करता है। देश छोटा हो या बड़ा, किसी कार्य को मुकाम देना इच्छाशक्ति व दृढ़ संकल्प पर निर्भर रहता है।

अगले सप्ताह देश-विदेश में कुछ अन्य और वरिष्ठ पेड़ों के दिलचस्प तत्वों पर चर्चा करने का प्रयास रहेगा।